(उच्चतम सीमा तथा विनियमन) अधिनियम, 1976 की धारा 46 की उपधारा (3) के अन्तर्गत नगर भूमि (उच्चतम सीमा तथा विनियमन) संशोधन नियम, 1978 (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) की एक प्रति जो दिनांक 18 फरवरी, 1978 के भारत के राजपत्र मे अधिसूचना संख्या सा०का०नि० 273 में प्रकाशित हुए तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन सभा पटल पर रखता हू ।

[*Placed in Library See* No LT-1753/78]

श्री विजय कुमार मलहोत्रा (दक्षिण दिल्ली) उपाध्यक्ष महोदय, अगर इस तरह से अंग्रेजी का वर्शन यहा आ जाता है और हिन्दी का वर्शन नही आता है तो इस तरह तो हिन्दी का वर्शन कभी आयेगा ही नही । हमे अंग्रेजी के साथ साथ ही हिन्दी का वर्शन लाने के लिये भी प्रयत्न करना चाहिए ।

MR DEPUTY SPEAKER Only Mr Mavalankar has written to me earlier.

12.09 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

REPORTED DEMONSTRATION IN BAREILLY AGAINST POLICE FOR SHOWING DISRESPECT TO DR AMBEDKAR.

श्री मंगल देव (अकबरपुर) उपाध्यक्ष महोदय, मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर गृह मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह इस बारे मे वक्तव्य दे —

"पुलिस द्वारा डा० बी० आर० अम्बेदकर की प्रतिमा के प्रति असम्मान प्रकट किए जाने के विरोध मे 6 मार्च, 1978 को बरेली मे अनुसूचित जातियों तथा अल्पसंख्यक समुदायो के लोगो के विशाल प्रदर्शन का समाचार ।"

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अनिल लाल मण्डल) : महोदय, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रेषित सूचना के अनुसार बरेली के घासी राम गौतम नामक एक व्यक्ति ने 3 फरवरी, 1978 को लकडी का एक खोखा लगाकर मुख्य सडक पर अतिक्रमण किया और उसमें एक पान की दुकान शुरु की। उसने खोखे में डा० अम्बेदकर के तीन चित्र लगाए सम्भवत: इसलिए कि प्राधिकारी खोखे को न हटाएं। और इस प्रकार बाबा साहेब अम्बेदकर का नाम अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए घसीटा ।

अतिक्रमण को हटाने के लिए स्थानीय प्राधिकारियो द्वारा श्री घासी राम को राजी करने के प्रयास किए गए, परन्तु सफल नही हुए। अत म्युनिसिपल बोर्ड प्राधिकारियो ने इस अतिक्रमण को सडक से हटाने के लिए पुलिस सरक्षण मे अपने कर्मचारी भेजे। दल ने अतिक्रमण को हटाने के लिए श्री घासीराम को राजी करने का पुन प्रयास किया परन्तु असफल होने पर खोखा हटाने लगे। घासी राम और उसके दो रिश्तेदारो ने इन सरकारी कर्मचारियो को अपने वैध कर्तव्यो के निर्वहन से रोका और गाली गलौज की और हाथापाई भी की। अत इन्हे भारतीय दण्ड संहिता की धारा 332/353 के अन्तर्गत गिरफ्तार करना पडा और उसके बाद ही अतिक्रमण को हटाया जा सका। घासी राम ने खोखे पर लगे डा० अम्बेदकर के चित्रो को हटाने की भी परवाह नही की, अत. इन्हे अधिकारियो ने कब्जे मे ले लिया और आदर से रखा जा रहा है ।उनके प्रति कोई निरादर अथवा असम्मान नही प्रगट किया गया ।

कुछ तत्वो से निजी स्वार्थवश डा० अम्बेदकर के नाम से अनुचित लाभ उठाने के प्रयास मे अनुसूचित जातियो की भावनाओ को भडकाने के उद्देश्य से, 5 मार्च, 1978 को बरेली मे एक जलूस निकाला जिसमें बताया जाता है कि लगभग 200 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

श्री मंगल देव : मैंने मंत्री महोदय के वक्तव्य को बहुत ध्यान से सुना है। नगरपालिका बरेली ने एक प्रस्ताव के द्वारा सन् 1974 में स्वीकार कर लिया था कि कोतवाली के सामने जो डा० भीमराव अम्बेदकर पार्क है उस में उनकी एक मूर्ति लगाई जाएगी। इस में काफी विलम्ब होता गया और उनकी मूर्ति उस वचन के अनुसार नहीं लगाई गई। बल्कि नगरपालिका में दूसरे जो प्रस्ताव बाद में आए स्वामी विवेकानन्द और पंडित जवाहर लाल नेहरु की मूर्तियां अलग-अलग स्थानों पर लगाने के उनको कार्यान्वित कर दिया गया। बार-बार इसके सम्बन्ध में निवेदन करने पर भी कुछ सुनवाई नहीं हुई। दो फरवरी को नौबत राम सागर ने इसके विरोध में अनशन प्रारम्भ किया ताकि नगरपालिका से उसके वायदे का निर्वाह करवाया जा सके। यह अनशन चलता रहा। सात फरवरी को उत्तर प्रदेश के डिप्टी मिनिस्टर श्री बाबू लाल जी वर्मा वहां आए और उन्होंने उस नवयुवक को समझा बुझा कर अनशन तुड़वा दिया और आश्वासन दिया कि नगरपालिका से मैं बात करूंगा और आगे कार्रवाई करूंगा। अनशन की समाप्ति पर उनके सम्मान में एक सभा धन्यवाद का प्रस्ताव पारित करने के लिए आयोजित होने वाली थी। इसी बीच में नगरपालिका के कर्मचारी आए और इस खोखे में जहां पर डा० अम्बेदकर की फोटो शीशे में जुड़वा कर लटकाई हुई थी और जहां पर छोटी सी पान की दुकान थी कहा कि दस मिनट में इसको खाली कर दो। इस पर उन्होंने कहा कि इसको हटा लेते हैं। वहां पर अनशन पर जो आदमी बैठा था उसको देखने के लिए लोग आते थे और उनको पान, पानी, शरबत आदि दिया जाता था। अभी वे इस मूर्ति को हटा ही रहे थे कि इस बीच में कोतवाली के इंस्पेक्टर मि० एस० एन० घोष एक दम कर्मचारियों के साथ आए और धक्का मुक्का तथा गाली देते हुए उन्होंने फोटो को डंडे से पीट कर नीचे गिरा दिया और पैर से ठोकरें मार कर उसको म्यूनिसिपैलिटी की गाड़ी में जिस में अन्य सामान ले जाया जाता है फिकवा दिया और चलते बने। इसके विरोध में सभी नवयुवकों और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने मंत्री महोदय से सर्किट हाउस में मिलने की कोशिश की। लेकिन इस इंस्पैक्टर ने घेरा डलवा कर उस दिन उनसे मिलने नहीं दिया। आप पुलिस की रिपोर्ट पर विश्वास करते हैं। हम लोग इतने दिन इस पुलिस की रिपोर्ट पर ही बन्द रहे और यह चीज सारे सदन को मालूम है और मैं उस में जा कर सदन का समय लेना नहीं चाहता हूं। यह मनोवृत्ति की बात है। एक पुलिस का अफसर या एक व्यक्ति अपने कुकृत्य से सारे समाज में तनाव और जहर फैला देता है। झूठी और मनगढ़न्त रिपोर्ट, सम्भवत: शब्दों का प्रयोग करके आपके पास भेज दी गई है और उसको आपने यहां पढ़ दिया है। न केवल बरेली में बल्कि सारे देश में इस तरह के व्यक्तियों के द्वारा जहर फैलाया जा रहा है, समाज में तनाव की स्थिति पैदा की जा रही है। इनको अगर कसा नहीं गया और जिस तरह की रिपोर्ट आपके पास आती है उसको पढ़ कर सुना देंगे और संतोष कर बैठेंगे तो यह ठीक नहीं होगा। इस प्रकार का जहर फैलाना और तनाव की स्थिति पैदा करना न केवल इस सदन के लिए बल्कि देश के लिए भी महंगा पड़ेगा।

मैं जानना चाहता हूं कि क्या आप इस सारे मामले की फिर से जांच करवाएंगे और उत्तर प्रदेश की सरकार पर दबाव डालेंगे कि वह न्यायिक जांच बिठाए ? जिस तरह से पुलिस ने रिपोर्ट दे दी है। उस पर आपको संतोष करके बैठ नहीं जाना चाहिये। डा० अम्बेदकर न केवल उन नवयुवकों के लिए, न केवल बरेली के इन लोगों के लिए बल्कि सारे देश के लिए श्रद्धा के पात्र हैं सम्मान के पात्र हैं। उन की

तस्वीर की बेइज्जती की गई है और जो वहां पर इसका विरोध हुआ है उसकी जांच करने के लिए क्या आप न्यायिक जांच बिठाने की कृपा करेंगे ?

श्री धनिक लाल मंडल माननीय सदस्य ने घटना का जो विवरण दिया है कि तीन फरवरी को श्री नौबत राम अनशन पर बैठे म्यूनिसिपल बार्ड ने जो वादा किया था कि डा० अम्बेदकर साहब पार्क मे उनकी मूर्ति लगायी जायेगी, यह सही है और उसका विवरण यह है कि म्युनिसिपल बार्ड ने जयपुर की एक फर्म को इसके लिये सप्लाई का आदेश दिया था। लेकिन जयपुर की वह फर्म किन्ही कारणो से बार-बार कहने पर भी और एडवास जमा करने के बाद भी मूर्ति नही दे पायी थी। अब मे यह सूचना आपको दे रहा हूं कि जयपुर फर्म मूर्ति देने को तैयार हो गई है और म्युनिसिपल अथौरिटीज मूर्ति का लेने के लिये वहां गये हुए है और उस मूर्ति की स्थापना हो जायेगी। लेकिन उस समय तक मूर्ति नही आयी थी बावजूद म्युनिसिपल अथौरिटीज के प्रयास के। तो नौबत राय जी इसी के लिये वहां अनशन कर रहे थे। इसी की आड मे श्री घासी राम, पार्क के सामने सडक पर, अपनी पान की दुकान ले गये और वही डा० अम्बेदकर की मूर्ति लगाये थे। तो मतलब यह है कि इतने बडे आदमी की मूर्ति लगाने से, जिसकी सभी इज्जत करते हैं उनके नाम और तस्वीर का इस तरह से उपयोग करना यह सर्वथा अनुचित है। और पुलिस ने किसी प्रकार का उनके प्रति असम्मान नही किया (जो ऐनक्रोचमेंट था उसको हटाने मे पहले तो समझा बुझाकर हटाने का प्रयास किया गया, लेकिन जब वह प्रयास विफल हुआ तो म्युनिसिपल कर्मचारियो ने उसका हटाने के लिये प्रयास किया और जिन लोगो ने विरोध किया उनको गिरफ्तार कर के उस के फोटो को हटा दिया गया। मैं सदन को आश्वासन देना चाहता हू कि किसी प्रकार का कोई असम्मान उनके प्रति नही हुआ है, वह फोटो कोतवाली थाने में रखी गई है और कभी-कभी माल्यार्पण भी किया जाता है और उनका पूरा सम्मान किया जाता है। किसी प्रकार का भी कोई असम्मान नही किया गया।

श्री राम विलास पासवान : (हाजीपुर) : उपाध्यक्ष महोदय मंत्री महोदय ने जो कहा उससे घटना की गम्भीरता को कम दिखाया गया है। लेकिन मंत्री महोदय से जब भी हमारी व्यक्तिगत बातचीत होती है, इस समाज के बारे मे जिस समाज मे हिन्दुस्तान चल रहा है और जो अफसरशाही है उसमे मंत्री जी भी इस बात को कबूल करते हैं कि अफसरशाही का नगा नाच होता है, हरिजनो और कमजोर वर्ग के ऊपर ज्यादतियां होती हैं, सबल वर्ग द्वारा उन पर अत्याचार किये जाते हैं, इसमे कोई दो रायें नही है। और उपाध्यक्ष महोदय . .

श्री बी० पी० मण्डल (मधेपुरा) उपाध्यक्ष महोदय, मेरा पांइट आफ आर्डर है। *प्राइवेट तौर पर मंत्री महोदय से क्या बात* होती है उसका इस से कोई मतलब नही है। उस पर सदन का समय खर्च न किया जाय।

श्री रामविलास पासवान : उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हू कि माननीय सदस्य की जो भावनायें हैं, और आप से भी हमारी व्यक्तिगत बात होगी तो मैं कहता हू कि जो सब कुछ आज होता है वह समाज की देन है यह आज से नही है, शुरू से होता आया है। यह कहना कि इस सरकार द्वारा हो रहा है या विगत सरकार द्वारा हुआ यह तो एक लडी की कडी है जिसका आज तक रोका नही गया बिहार मे इसके पहले 15 फरवरी को एक हरिजन को जिन्दा जला दिया गया खपेथा मे, मध्य प्रदेश मे 28 तारीख के पेपर मे देखा कि वहा की सरकार ने कहा कि 1977 मे 9 महीने के अन्दर 105 हरिजनो की हत्या की गई। बिहार मे इमरजेंसी के दौरान मे मुख्य मंत्री के कथनानुसार 150 से अधिक हरिजनो को मार दिया गया। सरकार ने

[श्री रामविलास पासवान]

मारा यानी पुलिस द्वारा मारा गया और जो हरिजन लडकियो के साथ बलात्कार का मामला है उसकी भी कोई सख्या नहीं है। जब ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पर बहस होती है तो महज इसलिये नहीं होती है कि जो प्रश्न हम पूछ रहे हैं उसी प्रश्न के जायें। उसका मतलब होता है कि सदन का ध्यान देश में चल रहे वातावरण की ओर खींचा जाये।

मैं बडे अदब के साथ कहना चाहता हू कि जो वर्तमान परिस्थिति है—और जो विगत पांच हजार बरसो से चली आ रही है—हरिजनो और कमजोर वर्गों पर जिस तरह से अत्याचार होते चले आ रहे हैं, और उन्हे जितने हल्के तरीके से लिया जा रहा है, उससे हरिजनो और कमजोर वर्गों की कभी भलाई नही होने वाली है।

मत्री महोदय ने कहा है कि इस म कुछ षड्यत्र मालूम होता है। मैं यह पूछना चाहता हू कि इस घटना के पीछे जिन तत्वो का हाथ है, क्या उन का उद्देश्य वर्तमान सरकार को बदनाम करने की कोशिश करना है या किसी साजिश के तहत ऐसे काम किये जा रहे हैं, या ये काम अफसरशाही, सरकार या प्रशासन की गलती से होते हैं। मैं यह भी जानना चाहता हू कि जनता सरकार के द्वारा हरिजनो की सुरक्षा के लिए अभी तक क्या उपाय किये गये हैं, जिससे भविष्य म ऐसी घटनाओ की पुनरावृत्ति न हो।

श्री धनिक लाल मण्डल : मैंने षड्यत्र का नाम तो कही नही लिया है। मैंने इतना कहा है कि डा० साहब के नाम का उपयोग करने का यह प्रयास किया गया, जो सर्वथा अनुचित है। डा० भीमराव अम्बेडकर इतने बडे आदमी थे, जिन की सब इज्जत और सम्मान करते हैं, जिन के लिए सब के मन मे आदर है। उनके नाम को—या किसी दूसरे महानुभाव के नाम को—अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए उपयोग किया जाये, वह बिल्कुल अनुचित और निन्दनीय है। मैंने कहा है कि पुलिस ने कोई असम्मान प्रकट नहीं किया है। उसने पूर्ण सम्मान प्रकट किया है। पुलिस ने तस्वीरो को अपने कब्ज मे ले लिया, उन्हें थाना कोतवाली मे रखा, मारपीट किया, और अब भी कर रही है।

श्री राम विलास पासवान : जनता सरकार के द्वारा अभी तक क्या कार्यवाही की गई है कि हरिजनो पर अत्याचार न हो? मेरे इस प्रश्न का उत्तर नही दिया गया है।

उपाध्यक्ष महोदय यह बडा व्यापक सवाल है

प्रधान मत्री (श्री मोरारजी देसाई) : उस के बारे मे पहले भी कहा है कि हम कदम उठा रहे है और हमे इस मे कुछ सफलता मिलेगी ऐसा मेरा विश्वास है। हम इस के लिए काम कर रहे है। इस मे सब का सहकार चाहिए। लेकिन उसे इस केस के साथ मिला देना ठीक नही है। उससे इस की पूर्ति नही होगी।

श्री राम देवी राम (पलामू) : माननीय मत्री महोदय ने तथ्यो का बिल्कुल तोड-मरोड कर रखा है। सब से पहले मैं यह जानना चाहता हू कि क्या डा० अम्बेडकर की मूर्ति शीशे म लगा कर रखी गई थी या यो ही थी। क्या यह सत्य नही है कि वह शीशे मे थी, और पुलिस कार्रवाई के बाद शीशा टूट कर नीचे गिर गया था? मत्री महोदय ने कहा है कि घासीराम और उसके रिश्तेदारो ने सरकारी पदाधिकारियो के साथ धक्का-मुक्की की। अगर हरिजन इस तरह की मुखालिफत करना शुरू करे, तो वैसी घटना घट जाती,

जैसे जोधपुर में घटी, जहां उन्हें गोली से उड़ा दिया गया था। क्या मंत्री महोदय यह समझते हैं कि आज ऐसी स्थिति है कि हरिजन सरकारी प्रशासिकारियों का मुकाबला करें? अगर इस तरह की बात होती, तो खासीराम की जान बचने वाली नहीं थी। इसलिए मंत्री महोदय ने इस तथ्य को तोड़-मरोड़ कर रखा है। मुझे आश्चर्य है। श्री मण्डल जी को हम पंद्रह बरस से जानते हैं। उनके विचारों को जानते हैं। उन्हें अपने विचारों के प्रतिकूल बोलना पड़ रहा है। मैं चाहता हूं कि इस बारे में फिर से एनक्वायरी बिठानी चाहिए और इस बात का पता लगाना चाहिए कि क्या शीशे में मढ़ी हुई मूर्ति टूट कर नीचे गिरी या नहीं। इसे सही साबित होने में पुलिस पर कार्रवाई होनी चाहिए। मंत्री महोदय ने यह कबूल किया है कि म्यूनिसिपैलिटी में इस तरह का प्रस्ताव था। परन्तु बाबा साहब की मूर्ति बैठाना नहीं चाहते थे। कालिंग एटन्शन नोटिस देने के बाद जयपुर की फ़र्म ने मूर्ति देना कबूल किया है। मैं यह जानना चाहता हूं कि इतने दिन पहले कबूल न करने का क्या कारण था। मंत्री महोदय इस तथ्य की जानकारी प्राप्त करें।

श्री धनिक लाल मण्डल: घटनाओं को किसी प्रकार से तोड़ा मरोड़ा नहीं गया है, और यह घटना बहुत साधारण है। जैसा कि मैंने कहा है, यह बात सही है कि मूर्ति लगाने की बात थी, और है। मैंने माननीय सदस्य को आश्वासन दिया है कि अब वह मूर्ति तत्काल लगाई जाने वाली है। लेकिन डा० अम्बेदकर की तस्वीर के प्रति किसी प्रकार का अनादर का भाव नहीं है।

श्री आर० एल० चुरीवाल (मोहनलाल गंज): उपाध्यक्ष महोदय, अभी मंत्री महोदय ने बतलाया कि डा० अम्बेदकर का अपमान करने की कोशिश नहीं की गई। पुलिस अधिकारियों की तरफ से वह अच्छे वकील हैं इस में कोई शक नहीं है लेकिन मैं उनको बतलाना चाहता हूं कि अगर यही एटीच्यूट, यही प्रक्रिया रही इन मिनिस्टर्स की और अन्याय को इसी तरह से प्रोटेक्शन दिया गया तो सरकार की क्या हालत होगी, उस के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। आज मैं देखता हूं लोगों को जलाया जाता है, अत्याचार किए जाते हैं लेकिन हमारे सम्बन्ध में इन को कुछ दूसरा ही नजर आता है। हम अगर भूखे होते हैं तो इन को नजर आता है कि उपवास कर रहे हैं, अगर नंगे होते तो ये कहते हैं कि सूर्य स्नान कर रहे हैं। आज हम रोते हैं तो इन को गाना नजर आता है। यह स्थिति है हमारी हर तकलीफ में उन्हें कुछ और ही नजर आता है। यह अब तक चलेगा। पूरे हिन्दुस्तान में हरिजनों और आदिवासियों पर अत्याचार हो रहा है, उन को जलाया जा रहा है, उनकी बहू-बेटियों की इज्जत लूटी जा रही है और सदन में केवल बातें कह-कह कर के पुलिस अधिकारियों को प्रोटेक्शन दिया जा रहा है, यह बड़े ही शर्म की बात है। पिछली सरकार ने कुछ नहीं किया। इस सरकार से उम्मीद थी कि न्याय मिलेगा लेकिन बिल्कुल न्याय नहीं मिल रहा है। यह बड़े अफसोस की बात है। आज जो अत्याचारी है उन को प्रोटेक्शन किया जा रहा है। यू० पी० में हम ने देखा जो हरिजन अफसर हैं उन को फुटबाल बनाया जा रहा है, साइड ट्रैक किया जा रहा है, कहीं होम गार्ड में लगाया जा रहा है, कहीं-कहीं सी आई डी में भेजा जा रहा है। यह हालत है। टेरर मचा हुआ है। उन्नाव जिले में एक बलि में दो मजदूरों को बुलाया गया, एक हरिजन चमार था, एक कुम्हार था और कुए में बैठाया गया। वहां के डी एम और एस पी ने कुएं में चपला दिया। 15 दिन बाद और पन्द्रह हजार रुपया खर्च करने के बाद जब उस को

[श्री ग्रार० एल० कुरील]

खोला गया तो डाक्टर ने कहा कि अगर चार दिन तक निकाल दिए जाते तो भी बच जाते । इस तरह की समस्याएं हो रही हैं । लेकिन उत्तर प्रदेश की सरकार मौन है, यहां की सरकार मौन है । कोई कुछ नहीं कर रहा है, यह बड़े शर्म की बात है । अभी जगजीवन राम जी का अनादर किया गया, कोई बात नहीं, डाक्टर अम्बेदकर का अनादर किया जा रहा है..... (व्यवधान) .... सरकार के लिए कोई बात नहीं है, वह तो हमारे लिए है । बाबा साहब डा० अम्बेदकर जिन्होंने संविधान बनाया, हम लोगों को, इस समाज के बेजबान लोगों को, स्त्रियो को और बहु-जन लोगों को मानवता का अधिकार दिया, पुलिस अधिकारी उन का इस तरह से अपमान करें तो यह बड़े शर्म की बात है और उस की वकालत वरिष्ठ मंत्री करें यह और शर्म की बात है । मैं ज्यादा नहीं कहना चाहूंगा लेकिन मैं यह आश्वासन चाहूंगा कि इन बेजबान लोगों के प्रति न्याय हो, इनके ऊपर अत्याचार बन्द हो, जो जलाया जा रहा है, जो इज्जत लूटी जा रही है, उस को समाप्त किया जाये । यह मेरा आप के द्वारा निवेदन है ।

श्री धनिक लाल मंडल : पुलिस के गलत कामों के बचाव का प्रश्न ही नही है न तथ्यों को तोड़ने मरोड़ने का ही प्रश्न है । हम लोग सतत यह कोशिश कर रहे हैं कि पुलिस का व्यवहार सभी के प्रति और विशेष कर हरिजन के प्रति संरक्षण का हो, मित्र का हो, भाई का हो और जैसा कि प्रधान मंत्री जी ने आश्वासन दिया, हम को इस में साफलता मिलेगी और हम जो काम कर रहे है उस का परिणाम आएगा ·

श्री हरिकेश बहादुर (गोरखपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी का बयान मैंने देखा है । मैं इस बयान के बारे में सिर्फ इतना कह सकता हूं कि उत्तर प्रदेश के भ्रष्ट नौकरशाहों द्वारा दिया गया यह एक भ्रामक वक्तव्य है । खोखा हटाने की बात हम नहीं करते । खोखा अगर गलत जगह पर था तो हम यह मानते हैं उस को हटाना चाहिए । लेकिन डा० अम्बेदकर की बात मैं कर रहा हूं । जो कि इस देश के एक महान नेता और एक महान स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी थे जिन के बारे में प्रत्येक व्यक्ति के मन में गहरा आदर और श्रद्धा की भावना भरी हुई है । वह एक महान देशभक्त थे और बहुत बड़े मानवतावादी थे जिन्होंने पूरे मुल्क को ही नही बल्कि पूरी दुनिया को बताया था कि किस तरह से वीकर सेक्शन के साथ न्याय करना चाहिए और उन्हें न्याय दिलाना चाहिए । अगर उत्तर प्रदेश के भ्रष्ट पुलिस अफसरों और बेईमान पुलिस अफसरों ने डाक्टर अम्बेदकर का इस तरह से अपमान किया है तो यह पूरे देश का अपमान किया गया है, केवल डा० अम्बेदकर की प्रतिमा के साथ ही अन्याय नहीं किया गया हैं । देवरिया में हरिजनों का हास्टेल जला दिया गया, बस्ती मे हरिजनों के साथ घटनायें घटित हुई लेकिन भ्रष्ट पुलिस अफसर तमाशा ही देखते रहे । मेरे साथ भी एक भ्रष्ट पुलिस अफसर ने दुर्व्यवहार किया जिस के बारे मे मैंने ब्रीच आफ प्रिविलेज का नोटिस दिया हैं और आप उसकी इंक्वायरी करवा रहे हैं । पुलिस अफसर इस तरह से गैर-जिम्मेदार हो गए हैं कि सरकार के आदेशों का सही तरीके से पालन नही करते । वे सरकार को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं । यदि सरकार ने इन भ्रष्ट पुलिस अफसरों पर नियन्त्रण नही किया तो थोड़े दिनों में ही सरकार की इमेज नष्ट हो जायेगी । किसी भी सरकार के लिए यह शर्म की बात है कि नौकरशाही उसके काबू के बाहर चली जाये । मंत्रीगण बार-बार इस तरह की बात कहते हैं कि

पुलिस अफसर एमपीज और एम एल एज की बात सुन लें लेकिन काम अपने मन का करें । अगर भ्रष्ट पुलिस अफसरों को इस तरह की छूट दी जायेगी तो वे इस सदन, सरकार और सारे देश की गरिमा को नष्ट कर देंगे । जापान के इतिहास मे, जब वहीं पर सम्राट का शासन था तो उस समय ब्युरोक्रैसी को बहुत ज्यादा अधिकार दे दिए गऐ थे जिसका नतीजा यह हुआ कि धीरे-धीरे उन्होने सम्राट को ही समाप्त कर दिया और खुद शासन पर कब्जा कर लिया । ब्युरोक्रैसी को समाप्त करने के लिए पिछली सरकार ने कुछ भी नही किया और इस शासन ने भी कुछ नही किया । मैं जानना चाहता हू कि नौकरशाहों के विरुद्ध गृह मंत्री जी क्या कदम उठा रहे है और क्या उसकी आंच करने के लिए कोई इंक्वायरी सेटअप कर रहे है या केवल राज्य सरकारों की बात मान कर ही संतोष कर लेंगे ?

श्री धनिक लाल मण्डल : अगर माननीय सदस्य कोई स्पेसिफिक नाम देंगे तो हम जरूर जाच करवायेगे : पुलिस की इमेज को बढाने के लिए कई प्रयास हो रहे हैं जो कि माननीय सदस्य की जानकारी मे हैं । पुलिस कमीशन की स्थापना की गई है जिसकी अनुशसा की प्रतीक्षा है । उसकी अनुशसा प्राप्त होने पर उचित अमल किया जायेगा । इसके अलावा यदि माननीय सदस्य का किसी खास घटना या खास व्यक्ति से सम्बन्ध हो, यदि उसका नाम व बतायेगे तो जरूर उस की जाच करवाई जायेगी ।

MR. DEPUTY SPEAKER: Now matters under Rule 377.

SHRI KANWAR LAL GUPTA (Delhi Sadar): Before you proceed to next item, I want to make a submission.

MR. DEPUTY-SPEAKER: About what?

SHRI KANWAR LAL GUPTA: It is a very important one.

MR. DEPUTY-SPEAKER: You just cannot get up and make any submission. Unless you have informed me earlier, it is not possible.

Shri Manohar Lal.

12.33 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) REPORTED MANUFACTURE OF SPURIOUS DRUGS IN KANPUR

श्री मनोहर लाल (कानपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, नियम 377 के अन्तर्गत मैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर इस सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । कानपुर उत्तर भारत का एक बहुत बडा औद्योगिक शहर है । जितना बड़ा वह औद्योगिक शहर है उतनी ही बडी-बड़ी समस्याओ का भी वह शहर है । अभी कुछ दिनो पहले वहा पर स्वदेशी काटन मिल मे औद्योगिक समस्या पैदा हुई थी जिसके सम्बन्ध मे मैंने इस सदन मे शंका प्रकट की थी कि दो सौ मजदूर गोली से मारे गए ।

उसी प्रकार की एक दूसरी गम्भीर समस्या की ओर से इस सदन का ध्यान आकर्षित कर रहा हू । कानपुर के अलावा उन्नाव और नैपाल मे नकली दवायें बनाने के कारखाने बडे जोर-शोर से चल रहे हैं : नकली दवाए कानपुर शहर मे बड़ी मात्रा मे बनाई जा रही है । नकली दवाइया बनाने के बडे-बडे कारखाने वहा पर स्थापित हो गए है । केवल कानपुर मे ही नही, उन्नाव और नैपाल मे भी कारखाने लगे हुए है । अभी एक साल पहले कानपुर मे नकली ग्लूकोज काण्ड हुआ था । नकली ग्यूकोज अस्पतालो को सप्लाई किया गया